अध्याय

14

12147CH14

संग्रहालयों में वस्त्र संरक्षण

अधिगम उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के बाद शिक्षार्थी—

- ज्ञान के स्रोत के रूप में संग्रहालयों का महत्त्व समझ सकेंगे,
- वस्त्र संरक्षण की संकल्पना और वस्त्रों के नष्ट होने के कारकों का वर्णन कर सकेंगे,
- संग्रहालय वस्त्र संचयन की देख-भाल के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशलों की व्याख्या कर सकेंगे।

महत्त्व

ग्यारहवीं कक्षा की मानव पारिस्थितिकी एवं परिवार विज्ञान (एच. ई. एफ़. एस.) पाठ्यपुस्तक के भाग 1 के "भारत में वस्त्र परंपराएँ" नामक अध्याय में आपने सीखा कि उत्कृष्ट वस्त्र उत्पादों का निर्माण उतना ही प्राचीन है, जितनी कि भारतीय सभ्यता। केवल कातने और बुनने में ही नहीं, बल्कि रंग की खोज और वस्त्रों पर, विशेष रूप से सूती कपड़े की रँगाई और छपाई में भारत प्राचीन सभ्यताओं में प्रथम था। यही कारण था कि हज़ारों वर्षों तक भारतीय वस्त्र विश्व के लगभग सभी भागों में व्यापार की जाने वाली विशेष वस्तु बन गए। लगभग 15वीं शताब्दी के बाद से अभी तक भारत वस्त्रों के सबसे बड़े निर्यातक के रूप में जाना गया है। पूरे विश्व के मुख्य नगरों के संग्रहालयों में भारतीय वस्त्रों के लिए विशेष भाग नामित किए गए हैं, जो उस समय के शासकों को दिए गए उपहारों, व्यापार की वस्तुओं अथवा औद्योगिक प्रदर्शनियों की वस्तुओं के भाग थे।

© NCERT not to be republished

> संग्रहालय की प्रथा का उद्‌भव पश्चिम से हुआ जिसका लक्ष्य पुराकाल की वस्तुओं का संग्रह करना था। भारतीय संस्कृति में खंडित वस्तुओं के संग्रहालय स्थापित करने की कोई प्रथा न थी। उपयोग में लाई गयी मूर्तियाँ पवित्र जल में डुबो दी जाती हैं, पुन: उपयोग में आने वाली सामग्री का नवीकरण कर लिया जाता है और फटी-पुरानी वस्तुओं को भूमि में गाड़ दिया जाता है या जल में फेंक दिया जाता है, ताकि उस मिट्टी में मिल जाँए जहाँ से वे उत्पन्न हुई हैं।
> आनंद कुमारस्वामी (1968)

म्यूज़ियम (संग्रहालय) शब्द दर्शनशास्त्र की यूनानी विचारधारा से लिया गया है। यह म्युसेस का 'कला मंदिर' (*Temple of Muses*) होता था, अर्थात् सीखने और अध्ययन का एक पवित्र स्थान। भारत में संग्रहालयों की स्थापना, विशेष रूप से 19वीं शताब्दी के बाद वाले भाग में देश की धरोहर का अभिन्न अंग 'कला और संस्कृति' का ज्ञान लोगों तक पहुँचने का सबसे अच्छा तरीका माना गया।

संग्रहालय विविध और बहु परियोजनीय कार्य करते हैं। वे विभिन्न पुरानी और नयी संस्कृतियों/परंपराओं की कला वस्तुएँ, मिट्टी के बर्तन, कपड़े और विभिन्न प्रकार के पदार्थ इकट्ठे करते हैं, जो अकसर कीमती और दुर्लभ होते हैं। संग्रहालय की वस्तुएँ वर्गीकृत की जाती हैं, पंजीकृत की जाती हैं और उनके फ़ोटोग्राफ़ लिए जाते हैं। उनमें से कुछ स्थायी गैलरी अथवा अस्थायी प्रदर्शनियों में प्रदर्शित की जाती हैं, जबकि अन्य भंडार में रखी जाती हैं। अच्छी शोध की गई जानकारी के प्रकाशनों को तैयार करना और विद्वानों को अध्ययन के लिए वस्तुएँ उपलब्ध कराना कुछ अन्य पहलू हैं, जो संग्रहालय को ज्ञान का एक स्रोत बनाते हैं। इस प्रकार सामान्य शब्दों में संग्रहालय एक संस्था है, जहाँ स्थायी प्रर्दशनी रहती है और यह जनसाधारण की शिक्षा और मनोरंजन के लिए खुले रहते हैं।

संग्रहालयों में संचय किए गए वस्त्रों में बहुत अधिक भिन्नता होती है। वे अपनी ऐतिहासिक अभिरुचि, अपने सौंदर्य बोध और अपने सांस्कृतिक महत्त्व के कारण मूल्यवान होते हैं। अपने व्यापक आकर्षण के कारण, वस्त्र, विशेष रूप से ऐतिहासिक महत्त्व के पहनावे अकसर अधिकांश संग्रहालयों में स्थायी रूप से प्रदर्शित रहते हैं, परंतु उन वस्त्रों में हमारी अधिक रुचि उनकी सबसे बड़ी दुश्मन हो सकती है। हम उनका प्रदर्शन करते हैं, उन्हें धोते हैं, उन्हें पहनते हैं और उनकी बनावट का आनंद लेने के लिए उन्हें महसूस करते हैं और इस प्रकार वस्त्रों को क्षति के खतरे में डाल देते हैं। इस समझ के साथ कि वस्त्रों को सुरक्षित तरीके से कैसे संभालें, प्रदर्शित कीजिए और भंडारित कीजिए, यथासंभव ऐसे उपाय किए जाने चाहिए जिससे कि वस्त्रों की देख-भाल और संरक्षण में सुधार आए और उनसे प्राप्त होने वाली ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जानकारी तथा सौंदर्यपरक आनंद की उपलब्धता सुनिश्चित हो सके।

क्रियाकलाप 14.1

अपने शहर के संग्रहालय का भ्रमण कीजिए और प्रदर्शित वस्त्रों की सूची बनाइए। वहाँ के अधिकारियों और देखभाल करने वालों से बातचीत करिए और वस्त्रों को सुरक्षित रखने की उनकी गतिविधियों और उपायों को नोट कीजिए

मूलभूत संकल्पनाएँ

संग्रहालय निम्नलिखित अनेक उद्देश्यों के लिए संग्रहित की गई वस्तुएँ रखते हैं—

- शिक्षा
- ऐतिहासिक प्रमाणों के अभिलेख
- वस्तुओं के प्रकार्यों का प्रदर्शन
- प्रदर्शनी अथवा प्रदर्शन
- संरक्षण

ऊपर दिए गए प्रत्येक उद्देश्य के लिए संग्रहालय की भली-भाँति देखभाल की जानी चाहिए, अत: संरक्षण हर प्रकार के संग्रहालय का मुख्य कार्य बन जाता है। यह अपनी प्रशिक्षण योजनाओं, व्यावसायिक निकायों और आचार-संहिताओं और नैतिकताओं सहित एक विशिष्ट और पेशेवर गतिविधि है। संरक्षण के प्रारंभिक काल में इसका उद्देश्य वस्तु को पुन: स्थापित करना होता था, कभी-कभी उसके अपरिपक्व गौरव तक, परंतु अब संग्रहालयों में पुन:स्थापन को वस्तुओं को अनुमानित पूर्व स्थिति में लौटाने के रूप में परिभाषित किया जाता है। संरक्षण मुख्य रूप से किसी वस्तु के जीवनकाल को दीर्घ बनाने पर लक्षित एक संक्रिया है और यह उसके अल्पकालिक अथवा दीर्घकालिक प्राकृतिक या आकस्मिक ह्रास को रोकने में परिणत होती है। यह दो प्रकार का होता है—

1. निरोधक संरक्षण—संरक्षण संग्रहालय की नीति और संग्रह की देखभाल का महत्वपूर्ण तत्व है। यह संग्रहालय का आवश्यक उत्तरदायित्व है कि उनकी देखभाल के अंतर्गत सभी संग्रहों, चाहे वे भंडार में हों, प्रदर्शित किए गए हों या कहीं भेजे जा रहे हों, के लिए एक सुरक्षित पर्यावरण सृजित कीजिए और उसे बनाए रखिए। किसी भी संग्रहालय को यह निर्धारित करने के लिए कि कब किस संग्रहित कृति को संरक्षण कार्य और योग्य संरक्षणकर्त्ता की सेवाओं की आवश्यकता है, संग्रहों की नियमित रूप से सावधानीपूर्वक जाँच करनी चाहिए। यह प्रत्येक वस्तु के लिए अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराकर ह्रास को रोकने पर लक्षित होता है।

अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय परिषद् (आई.सी.ओ.एम.) के अनुसार परिरक्षण सांस्कृतिक संपदा को यथासंभव उनकी मूल स्थिति में बनाए रखने के लिए, उनके परिवेश पर नियंत्रण और/या उनकी संरचना के उपचार द्वारा उनके ह्रास या क्षति को कम करने या रोकने की एक प्रक्रिया है।

2. उपचारी/सुधारक हस्तक्षेपीय संरक्षण—हस्तक्षेपीय संरक्षण का तात्पर्य संरक्षणकर्ता के ऐसे किसी भी कार्य से है, जिसमें संरक्षणकर्त्ता और सांस्कृतिक सामग्री के मध्य परस्पर संपर्क रहे। इन हस्तक्षेपीय उपचारों के अंतर्गत सफ़ाई करना, ठीकठाक रखना, मरम्मत करना अथवा किसी मूल वस्तु के हिस्सों को बदलना भी शामिल हो सकता है। यह आवश्यक है कि संरक्षणकर्ता ऐसे किसी भी कार्य के साथ पूर्ण न्याय करे। उपचार से पहले, उपचार के दौरान और उपचार के बाद किए गए कार्यों का पूर्ण प्रलेखन बाद में पैदा होने वाली शंकाओं के अवसरों को समाप्त कर देता है। सरल शब्दों में इसका अर्थ है 'वस्तु में पहले से उपस्थित दोषों के उपचार हेतु कार्य करना, आगे होने वाली क्षति से बचाना और इसे अच्छी स्थिति में बनाए रखना तथा पुन: स्थापित करना'।

© NCERT not to be republished

वस्त्र संरक्षण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा वस्त्रों की देखभाल और रखरखाव किया जाता है ताकि भविष्य में होने वाली क्षति से उन्हें सुरक्षित रखा जा सके। यह अवधारणा शिल्पकृतियों की वृहद् शृंखला पर लागू होती है, जिसमें— टेपेस्ट्री, गलीचे, रज़ाइयाँ, झंडे, कपड़े, परदे, गद्दीदार फ़र्नीचर, गुड़िया और संबंधित वस्तुएँ, जैसे – पंखे, छाते, दस्ताने और टोपियाँ जैसे वस्त्र शामिल हैं।

जो व्यक्ति संग्रहालय की शिल्पकृतियों और वस्तुओं को सुरक्षित रखता है, वह संरक्षक कहलाता है। उसकी भूमिका बचावकारी और हस्तक्षेपी विधियों द्वारा ह्रास को रोकना या उसकी दर को कम करना होती है।

वस्त्र-विकृति के कारक

संग्रहालय में रखे गए वस्त्र मुख्य रूप से प्राकृतिक रेशों से निर्मित होते हैं, क्योंकि वस्त्र कार्बनिक प्रकृति के होते हैं, अत: विकृति के विभिन्न कारकों प्राकृतिक और मानव-निर्मित (सारणी 14.1) का उन पर प्रभाव पड़ सकता है। संग्रहों की देखभाल करने वालों के लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि वस्त्रों के क्षतिग्रस्त होने का कारण क्या है, उनके लक्षण कैसे पहचानें और सबसे महत्वपूर्ण है कि क्षति को कैसे रोकें।

प्राकृतिक कारक	मानव-निर्मित कारक
प्रकाश	सही तरीके से उपयोग में न लेना
ताप	उपेक्षा करना
आर्द्रता	खराब भंडारण
नाशक जीव	दुर्घटनाएँ
पर्यावरण में	आग

सारणी 14.1 — शिल्पकृतियों की क्षति के कारण

प्राकृतिक कारक

कार्बनिक प्रकृति के होने के कारण वस्त्र प्रकाश, ऊष्मा, आर्द्रता, नाशकजीवों तथा प्रदूषकों द्वारा क्षतिग्रस्त हो सकते हैं। आइए, अब जानें कि वस्त्रों के विरुद्ध कौन कार्य करते हैं और उनसे बचाव कैसे किया जा सकता है।

प्रकाश

वस्त्रों को एक बड़ा खतरा प्रकाश से होता है। प्रकाश ऊर्जा का एक रूप है जो वस्त्रों का रंग फ़ीका कर सकता है और वस्त्रों के रेशों का भौतिक और रासायनिक ह्रास कर सकता है। प्राकृतिक और पराबैंगनी प्रकाश दोनों में खुला छोड़ने पर वस्त्रों की आयु को खतरा हो सकता है। दृश्य और पराबैंगनी दोनों प्रकार का प्रकाश वस्त्रों की क्षति के

चित्र 14.1 — प्रकाश के कारण रंग का फ़ीका पड़ना

© NCERT not to be republished

लिए उत्तरदायी होता है। प्रकाश के कारण क्षति धीरे-धीरे होती है। आपने घर पर देखा होगा कि परदों की जिन परतों का रंग ज़्यादा धूमिल पड़ जाता है, वह सबसे पहले फटकर अलग हो जाती हैं। रंगों का धूमिल पड़ना, रंगों में परिवर्तन प्रकाश द्वारा होने वाली क्षति के आसानी से पाए जाने वाले लक्षण हैं। पहले वस्तु अपना लचीलापन खोती है, फिर कमज़ोर पड़ती है, भंगुर हो जाती है और अंत में फट जाती है, उसके टुकड़े धूल जैसे कणों में परिवर्तित हो जाते हैं। इस प्रक्रिया में वस्त्रों का पीला या भूरा पड़ जाना उनकी खराब अवस्था का सूचक है। प्राकृतिक प्रकाश पराबैंगनी प्रकाश का प्रमुख स्रोत है। पराबैंगनी प्रकाश सूर्य के प्रकाश में उपस्थित होता है और यह कई बल्बों द्वारा भी उत्सर्जित किया जाता है। यह बहुत कम समय में बहुत अधिक क्षति पहुँचाने की क्षमता रखता है।

प्रकाश से क्षति को रोकना

- वस्तु पर पड़ने वाले प्रकाश की तीव्रता को न्यूनतम करना
- वस्तुओं को कम से कम समय प्रकाश में रखना
- प्रकाश से प्रकाश रासायनिकी सक्रिय विकिरण को हटाना
- सामान्य धारणा है कि वस्त्र जैसी संवेदनशील वस्तुओं के लिए प्रदीप्त करने का अधिकतम स्तर 50 लाख से अधिक नहीं होना चाहिए

नमी और ऊष्मा

संग्रहालय की वस्तुओं को अच्छी स्थिति में रखने हेतु जलवायु महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यदि जलवायु की परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं हैं तो अभिक्रियाओं की एक शृंखला प्रदर्शों को क्षति पहुँचाना शुरू कर देती है। नियंत्रित जलवायु, विशेष रूप से नियंत्रित ताप और आर्द्रता प्रदर्शों को अच्छी स्थिति में रखती है।

आर्द्रता, द्रव अथवा वाष्प अवस्था में, वस्त्रों की क्षति के लिए विशेष रूप से गंभीर कारण है। उच्च और निम्न आर्द्रता में बदलाव, वस्त्रों के निरंतर प्रसार (फूलना) और संकुचन (सिकुड़ना) का कारण बनता है जो आर्द्रताग्राही प्रकृति का होता है। नमी, सूक्ष्म जीवों की वृद्धि का आधार होती है जो वस्त्र जैसे जैविक पदार्थों को संदूषित करता है। दूसरी ओर निम्न आर्द्रता, नमी की मात्रा की कमी के कारण वस्त्रों को प्रभावित करती है। इससे वस्त्र भंगुर, भुरभुरे और थोड़ा उलट-पुलट करने पर फट जाते हैं, क्योंकि ये उसके लचीलेपन को प्रभावित करते हैं।

नमी और ऊष्मा से क्षति को रोकना

- वायु की आर्द्रता और ताप को नियंत्रित रखिए। निम्न और उच्च दोनों प्रकार के ताप अप्रत्यक्ष रूप से विनाशकारी होते हैं। यह अनुशंसा की गई है कि आपेक्षिक आर्द्रता को 55% $\pm$ 5 पर ताप को 20^0C से 22^0C $\pm$ 2 के मध्य रखा जाए। यदि आवश्यक हो तो संग्रहालय के पर्यावरण को नियंत्रित करने के लिए आर्द्रकारकों अथवा निराद्री कारकों का उपयोग किया जा सकता है।
- यद्यपि निम्न ताप, नाशक जीवों और फफूँदी को निरुत्साहित करता है, फिर भी हिमांक के नीचे का ताप न आने दें।

© NCERT not to be republished

- वस्त्रों को भवन के प्राकृतिक समस्या युक्त भागों, जैसे – शुष्क और गरम ऊपरी मंज़िलें और तहखानों में भंडारित न कीजिए।
- भडांरण बक्सों और लटकने वाली अलमारियों में ज़्यादा सामान न भरके उनमें हवा आने दें।
- प्रभावी नियंत्रण उपायों के लिए संग्रहालय में आर्द्रता स्तरों को रिकॉर्ड करना आवश्यक है। आपेक्षिक आर्द्रता और ताप को रिकॉर्ड करने के लिए 24 घंटों या 7 दिनों के लिए ताप आर्द्रतालेखी यंत्र उपलब्ध है।

नाशकजीव

नाशकजीव वस्त्र के लिए एक अन्य प्रमुख खतरा है, क्योंकि बहुत से जीव हैं जो वस्त्रों को क्षति पहुँचा सकते हैं। इनमें से अधिकतर पाए जाने वाले मोथ (शलभ) कार्पेट बीटल, सिलवर फ़िश और चूहे होते हैं। इन कीटों का खतरा उष्णकटिबंधी जलवायु में शीतोष्ण क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक होता है और आर्द्रता कीटों की वृद्धि में सहायक होती है। कुछ कीट तो अपने लारवा (झिल्ली) स्वरूप में ही तबाही मचा देते हैं, जबकि अन्य पूर्ण विकसित स्वरूप में हानि पहुँचाते हैं। कपड़ा-शलभ प्रोटीन रेशों की ओर आकर्षित होते हैं और विशेष रूप से रेशम, ऊन और फ़रों की ओर आकर्षित होते हैं, वस्त्रों पर सफ़दे कोकून (कृमिकोष) या कीटों का दिखना संदूषण का साक्ष्य हो सकता है। सिलवर फ़िश और फ़ायर ब्रैट एक जैसे कीट हैं जो स्टार्च खाते हैं जो वस्त्रों की साइज़िंग और अन्य उपचारों के लिए काम में आती है।

नाशकजीवों से होने वाली क्षति की रोकथाम

कीटों से क्षति की रोकथाम लोगों और पर्यावरण दोनों के लिए निरापद है और अनियंत्रित आक्रमण को रोकने के लिए कीटनाशियों का उपयोग करने की अपेक्षा बहुत आसान और सस्ता भी होता है।

चित्र 14.2 — नाशक जीव

- संग्रहालय का वातावरण ठंडा और शुष्क रखिए
- स्थानों को अंदर और बाहर से साफ़-सुथरा और कचरा मुक्त रखिए। बसेरा करने वाले पक्षियों का कचरा नालियों और छतों पर गंदगी फैलने का, संक्रमण फैलाने का एक सामान्य स्रोत है।
- यदि संभव हो तो भंडार और प्रदर्शन के क्षेत्रों से दूर एक स्थान रखिए, जहाँ बाहर से आने और जाने वाली वस्तुएँ खोली और पैक की जाती हैं और जहाँ संदिग्ध वस्तुओं को संगरोध (क्वारंटाइन) के लिए रखा जा सके
- कीटों के आक्रमण वाले सभी शांत, गर्म और अँधेरे वाले स्थलों की, जैसे – चिमनियाँ, आग जलाने के स्थल, संवातन नलिकाएँ और जालियाँ, पेटिकाओं के नीचे तथा कालीनों और परदों के नीचे, नियमित जाँच कीजिए

फफूँदी

फफूँदी हलके गरम, नम वातावरण में लगती है, जहाँ वायु का आवागमन कम होता है। यदि आप वस्त्रों पर रोएंदार वृद्धि या बिखरे हुए धब्बे पाएँ या हवा में एक फफूँदीदार गंध हो तो यह उसका सूचक है कि संभवत:

यह क्षति फफूँदी के कारण हुई है। फफूँदी वस्त्रों को स्थायी रूप से नष्ट या धब्बेदार कर सकती है और अंतत: कपड़े का सामर्थ्य पूर्ण रूप से समाप्त हो जाता है। फफूँदी लगे कपड़ों के निवारण का काम करते समय धूल मास्क, चश्मे, उपयोग के बाद फैंक दिए जाने वाले दस्ताने और पूरा तन ढकने वाली पोशाक की अनुशंसा की जाती है।

फफूँदी से होने वाली क्षति को रोकना

पर्यावरण का नियंत्रण करना, फफूँदी से बचाव का एकमात्र वास्तविक रूप से प्रभावी उपाय है। यद्यपि पूर्व में उपचार के बहुत से प्रयास किए गए, परंतु वस्त्र में एक बार फफूँदी लगने के बाद उसका कोई वास्तविक उपचार नहीं है।

- आपेक्षिक आर्द्रता को 65 प्रतिशत से कम और ताप को 18^{o} C से कम रखिए
- वायु का परिचालन सुनिश्चित कीजिए। विशेष रूप से भंडार के बक्सों को गीली दीवारों के संपर्क से दूर रखिए और बक्सों को यदि उनके नम होने का थोड़ा भी खतरा हो, आवश्यकता से ज़्यादा न भरिए
- संदूषण के फैलाव से बचिए। फफूँदी लगे वस्त्रों को दूसरी वस्तुओं के पास न खोलिए और जिन बक्सों में संदूषित वस्त्र रखे हुए थे, उनमें अन्य वस्तुओं को न भरिए। प्रभावित वस्तुओं को अम्ल मुक्त पतले मुलायम कागज़ में लपेट दीजिए, जिससे बीजाणुओं का फैलाव न हो तथा इसके साथ-साथ वायु परिचालन को भी सुनिश्चित कीजिए

धूल

धूल, वायु में उपस्थित महीन कणकीय वह प्रदूषक है, जिसमें विभिन्न पदार्थ निलंबित होते हैं, जैसे – रेशे, मिट्टी के कण, मानव और जंतुओं की त्वचा और बालों के अंश, वायु प्रदूषक, जैसे – धुएँ और राख के कण, फफूँदी के बीजाणु, पेंट के अंश और पराग कण।

क्रियाकलाप 14.2

किसी संग्रहालय में जाएँ, जहाँ वस्त्रों के संग्रह हों और यदि कोई क्षतियाँ हुई हैं तो उनकी सूची बनाइए और उन कारणों को नोट कीजिए, जिनसे संभवत: धरोहर सामग्री में परिवर्तन हुए हैं।

वस्त्रों के ऊपर धूल ताज़ी-ताज़ी जमी हो तो उसे हटाया जा सकता है, परंतु समय के साथ यह रेशों में चली जाती है और इसे तब हटाना असंभव-सा हो जाता है। धूल में पोषण मिलने से नाशक कीट उसमें आश्रय ले लेता है।

धूल से होने वाली क्षति की रोकथाम

- धूल को रोकने के लिए विशेषज्ञ निर्माताओं द्वारा बनाई गई धूलरोधी डिज़ाइन की गुणवत्ता वाली मंजूषाओं को उपयोग में लाएँ।
- खुले में प्रदर्शन न कीजिए और सुनिश्चित कीजिए कि खुले में प्रदर्शित सभी वस्त्रों को वर्ष में कम से कम एक बार प्रशिक्षित कर्मचारियों द्वारा हलके वैक्यूम क्लीनर से साफ़ किया जाए।
- वस्त्र जब भी प्रदर्शन-मंजूषाओं या बक्सों के बाहर हों, उन्हें धूल से बचाने वाली शीटों में लपेटकर और ढककर रखा जाए। लपेटने वाली शीटें ऐसी होनी चाहिए, जिनमें हवा आर-पार जा सके—अपारगम्य प्लास्टिक, जैसे – पॉलिथीन शीटों को, केवल वस्त्रों को जल से बचाने की स्थिति में ही काम में लीजिए।

© NCERT not to be republished

- यह सुनिश्चित कीजिए कि वस्त्र धूल भरी सतहों, जैसे – मेज़ की ऊपरी सतह और बॉक्स के ढक्कन के संपर्क में नहीं आएँ। जब निरीक्षण के लिए वस्त्रों को बाहर रखना हो, तब उस स्थान पर धूल से बचाने वाली स्वच्छ शीटों को उपयोग में लाएँ।

मानव जनित कारक

मनुष्यों द्वारा वस्त्रों को क्षति पहुँचाने वाले कारक बहुत से हैं, इनमें अधिकतर गलत तरीके से उपयोग में लेने, उपेक्षा करने, खराब भंडारण, दुर्घटनाओं से होने वाली क्षतियाँ हैं। वस्त्र क्रीज (चुन्नट) से फट जाते हैं, क्योंकि उन्हें मोड़कर भंडारित किया जाता है। क्षतियाँ आंगित होती हैं, वस्त्रों के सावधानीपूर्वक हस्तरण, उनको पैक करने और भंडारित करने के उपयुक्त तरीके अपनाकर उनसे बचा जा सकता है।

वस्त्रों का भंडारण

प्रतिकूल भंडार परिस्थितियाँ संग्रह की सभी वस्तुओं को प्रभावित करती हैं, क्योंकि परिवर्तन लंबी समयावधि में धीरे-धीरे होते हैं, उनके प्रभाव सदैव स्पष्ट नहीं होते। फिर भी यदि एक बार परिवर्तन हो जाते हैं तो उन्हें बदला नहीं जा सकता अथवा उनसे निपटने के लिए जटिल और महँगे उपचार करने पड़ते हैं। एक अच्छा भंडार पर्यावरण भौतिक क्षति को रोकता है और रासायनिक विकृति को धीमा करने में मदद करता है। इससे वस्त्रों से संबंधित वस्तुओं का जीवन काल बहुत बढ़ जाता है। भंडार की स्थितियाँ पहले ही बताई जा चुकी हैं और व्यावसायिक संरक्षणकर्ता उनका अनुपालन करते हैं।

वस्त्रों की धरोहर सामग्री को साइज़ और आवश्यकता के अनुसार भंडारित किया जाता है, जैसा कि नीचे चित्र में दिखाया गया है—

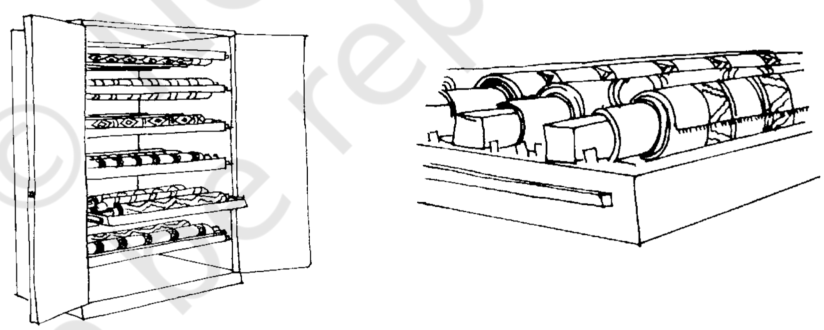

चित्र 14.3 — लिपटा हुआ भंडार

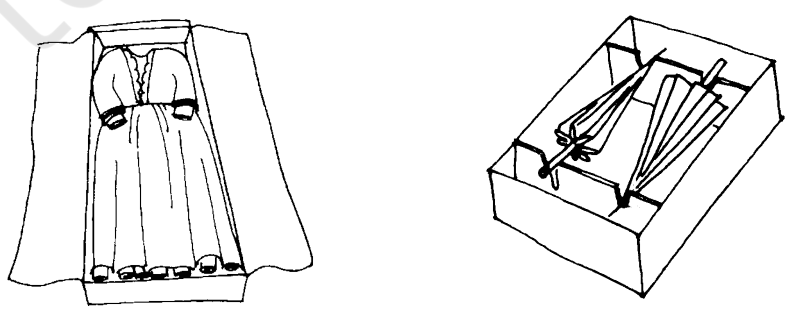

चित्र 14.4 — बॉक्स भंडार

© NCERT not to be republished

वस्त्रों के प्रदर्शन के लिए आदर्श स्थितियाँ

वस्त्रों को प्रदूषकों, धूल और कीटों से बचाना चाहिए। वायु में उपस्थित रसायन जो वस्त्रों को सबसे अधिक प्रभावित करते हैं, उनमें धुआँ, तेल और अम्ल शामिल होते हैं। धुएँ से धब्बे पड़ जाते हैं और रंग फ़ीका पड़ जाता है, जिन्हें दूर करना अत्यधिक कठिन होता है। वस्त्र जब ऐसे कमरे में प्रदर्शित किए जाते हैं, जिसमें अग्नि कोष्ठ हो या जहाँ धूम्रपान की अनुमति हो, तो वस्त्रों को धुएँ से बचाव वाले, जैसे – सील किए गए फ्रेम या सील किए जा सकने वाले बक्सों में रखना चाहिए। पीड़कनाशीय पट्टियाँ (पेस्ट स्ट्रिप्स) और कुछ प्रकार के प्लास्टिक अल्प मात्रा में अम्ल छोड़ते हैं, अत: बंद भंडार क्षेत्रों में पेस्ट स्ट्रिप्स का सामान्यत: उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

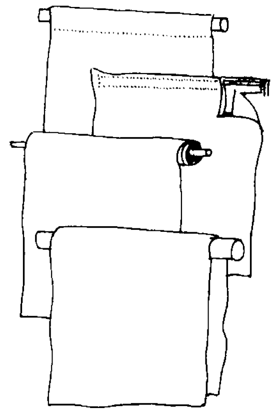

चित्र 14.5 — लटकते प्रदर्शन

जीविका (करियर) के लिए तैयारी

यह एक उभरता हुआ क्षेत्र है जो विशेष रूप से विकसित हो रहे कलाकारों के लिए भरपूर रचनात्मक तुष्टि देने वाला है। संरक्षणकर्ता बनने के लिए सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता कला बोध की है। व्यक्ति को कला के प्रति लगाव होना चाहिए और उसमें किसी भी कलाकृति में सन्निहित जटिलताओं का मूल्यांकन करने और समझने का रुझान होना चाहिए—

- व्यक्ति को आधारभूत विज्ञान विषयों, विशेष रूप से रसायन और भौतिकी का अच्छा ज्ञान होना चाहिए और ऐसी कक्षाएँ कुछ कार्यक्रमों जैसे कुछ भारतीय और विदेशी विश्वविद्यालयों में मास्टर ऑफ़ आर्ट्स के लिए पूर्वापेक्षित होती हैं।
- आपको भारतीय के साथ विश्व स्तरीय वस्त्र निर्माण के इतिहास, तकनीकों और प्रकियाओं का ज्ञान यह निर्धारित करने के लिए आवश्यक रूप से होना चाहिए कि उनके संरक्षण के लिए कौन-सी विधियाँ उपयुक्त हैं।
- इसके अतिरिक्त आपको कला संरक्षण की उन्नत प्रौद्योगिकियों का ज्ञान भी अवश्य होना चाहिए
- संरक्षणकर्ताओं के लिए कला का ज्ञान और सौंदर्यबोध मूल्यों के प्रति संवेदनशीलता लाभदायक है, परंतु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह जानना है कि पदार्थ किस प्रकार परस्पर क्रिया करते हैं, काल प्रभावित होते हैं और अपक्षय हो जाते हैं। यह ज्ञान संरक्षणकर्ताओं को वस्त्र में होने वाली क्षति को रोकने में सहायक होता है और धरोहर सामग्री को लंबे समय तक बनाए रखता है।
- एक कला संरक्षक बनने में विशेषताएँ, जो सहायक होती हैं, उनमें हस्त-दक्षता, प्रबल संप्रेषण कौशल और अकेले अथवा टीम के पर्यावरण में कार्य करने की योग्यता शामिल हैं।
- कंप्यूटर और कंप्यूटर सॉफ़्टवेयर पद्धतियों का उपयोग जानना भी महत्वपूर्ण है।
- समस्या समाधान और विश्लेषणात्मक कौशलों का होना भी आवश्यक है।
- एक सफल संरक्षक में व्यापक शोध के लिए आवेग और दृढ़ता का होना आवश्यक है।
- आप कला को चाहने वाले और कला में दक्ष कलाकारों के कार्यों के प्रति पूरी तरह भावपूर्ण होने चाहिए।

© NCERT not to be republished

विभिन्न संस्थान कला संरक्षण विषयों में कम अवधि के, डिग्री वाले पाठ्यक्रम उपलब्ध कराते हैं। बहुत से संग्रहालय और कला दीर्घाएँ विकसित हो रहे व्यवसायियों को सेवाकालीन प्रशिक्षण के अवसर देते हैं, जहाँ विद्यार्थियों को वृत्ति भी दी जाती है—

- राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली में स्थित और भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत राष्ट्रीय संग्रहालय कला का इतिहास, संरक्षण और संग्रहालय संस्थान (*एन.एम.आई.एच.ए.सी.एम.*) एक मानित विश्वविद्यालय है। यह विश्वविद्यालय कला का इतिहास, संरक्षण और कलात्मक वस्तुओं के पुन: स्थापन, संग्रहालय विज्ञान जैसे विशिष्ट विषयों में एम.ए. और पीएच.डी.की उपाधियाँ देता है।
- दिल्ली स्थित धरोहर शोध और प्रबंधन संस्थान, लखनऊ स्थित राष्ट्रीय अनुसंधान और संरक्षण प्रयोगशालाएँ और भारतीय सांस्कृतिक निधि (इंटैक) द्वारा चलाए जा रहे संस्थान कला संरक्षण में छोटी अवधि के बहुत से पाठ्यक्रम उपलब्ध कराते हैं।
- विभिन्न विश्वविद्यालयों में गृहविज्ञान संकाय के अंतर्गत वस्त्र और परिधान विज्ञान विभाग/वस्त्र निर्माण और पोशाक विभाग/ वस्त्र निर्माण विज्ञान और परिधान डिज़ाइन विभाग वस्त्र-संरक्षण से संबंधित पाठ्यक्रमों के स्नातकोत्तर कार्यक्रम (जैसे कि दिल्ली विश्वविद्यालय में) उपलब्ध कराते हैं, जिसमें सैद्धांतिक और प्रायोगिक वस्त्र निर्माण प्रलेखन और संरक्षण का अध्ययन सम्मिलित हैं, जो विद्यार्थियों को समुचित रूप से संग्रहालयों में विभिन्न पदों पर कार्य करने के लिए तैयार करता है।

कार्यक्षेत्र

कोई भी व्यक्ति कला संरक्षण के क्षेत्र में डिग्री या कम अवधि के डिप्लोमा ग्रहण कर लेता है तो उसके पास राजकीय नौकरी या निजी संग्रहालयों या कला दीर्घाओं में कार्य करने के विकल्प होते हैं। राज्य द्वारा संचालित संग्रहालयों और कला दीर्घाओं में सरकार रोज़गार देती है। राज्य द्वारा संचालित संस्थानों में भी ऐसे व्यवसायियों को रोज़गार मिलता है। कला और संस्कृति विरासत का भारत के राष्ट्रीय न्यास द्वारा संचालित कला संरक्षण संस्थानों में भी ऐसे व्यक्तियों को रोज़गार दिया जाता है। निजी दीर्घाएँ, संग्रहालय, प्रतिष्ठान अथवा व्यक्ति, जिनके पास अपने स्वयं के बड़े संग्रह या दुकानें और एम्पोरियम (वाणिज्य केंद्र) होते हैं और जो पुरावस्तुओं का व्यापार करते हैं, वे इन व्यवसायियों को पूरे समय के लिए अथवा परियोजनाओं अथवा कार्य के आधार पर नियुक्तियाँ देते हैं, परंतु सबसे उत्साहजनक विकल्प स्वतंत्र व्यवसाय अथवा स्वयं का रोज़गार है। स्वतंत्र व्यवसायी भौगोलिक सीमाओं में बंधे हुए नहीं होते और अकसर उनकी नियुक्ति पश्चिम देशों में स्थित दीर्घाओं में हो जाती है।

संरक्षण का पाठ्यक्रम पूरा करने के पश्चात् बहुत से अवसर मिलते हैं—

- संरक्षण सहायक सुनिश्चित करते हैं कि प्रतिष्ठान और उसके संग्रह साफ़-सुथरे रहें और उन्हें दर्शकों के लिए उच्चतम संभावित मानकों में प्रस्तुत किया जा सके।
- संग्रहालयाध्यक्षों के पास स्नातकोत्तर संग्रहालयाध्यक्षीय अथवा संग्रहालय योग्यता होती है और साथ में उनको विशिष्ट विषय का गहन ज्ञान भी होता है और यह विशिष्ट विषय वस्त्र भी हो

© NCERT not to be republished

सकता है। वे अपनी सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक धरोहर की देखभाल, सुरक्षा और गुणगान करने हेतु ऐतिहासिक विशेषताओं को रिकॉर्ड करने, समझने, संरक्षण देने और समझाने के लिए उत्तरदायी हैं।

प्रमुख शब्द

संग्रहालय, कला संरक्षण, वस्त्र संरक्षण, निवारक और हस्तक्षेपीय संरक्षण, संरक्षक, संग्रहालयाध्यक्ष।

पुनरवलोकन प्रश्न

1. आप कला संरक्षण और वस्त्र संरक्षण से क्या समझते हैं?
2. निवारक और हस्तक्षेपीय संरक्षण में क्या भिन्नता है?
3. वस्त्रों को क्षतिग्रस्त करने वाले पर्यावरणीय कारकों का वर्णन कीजिए।
4. आप संग्रहालयों में वस्त्रों के भंडारण के लिए क्या अनुशंसाएँ करेंगे?
5. एक वस्त्र संरक्षक बनने के लिए किस प्रकार के ज्ञान और कौशलों की आवश्यकता होती है?
6. यदि किसी को कला संरक्षण के क्षेत्र में प्रवेश के लिए मार्गदर्शन चाहिए तो आप क्या सलाह देंगे?

© NCERT not to be republished